SHANTA - JODHPUR ☎ 2654321

सफेद मूसली

"क्लोरोफाइटम बोरिविलिएनम सांतापउ व फरनानडिस"

विशेषतायें एवं लाभ:

* जड़ में उपस्थित सेपोनिन इसका प्रमुख तत्व है।
* इसका उपयोग शारीरिक शिथिलता दूर करने, माताओं का दूध बढ़ाने, प्रसवोपरांत होने वाली बीमारी व शिथिलता दूर करने, मधुमेह, काम क्षमता वृद्धि एवं पौष्टिक एवं बलवर्धक औषधि के रूप में किया जाता है।

कृषि तकनीक:

मृदा:

* इसकी खेती हेतु सिंचित, अच्छी जल निकासी वाली रेतीली दोमट मिट्टी जिसमें जिवाश्म की पर्याप्त मात्र उपलब्ध हो सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है।

रोपण:

* पौधों को बीज एंव कंदों द्वारा प्रसारित किया जाता है। व्यापारिक खेती हेतु कंदों द्वारा प्रसारण उपयुक्त है। बुवाई हेतु कंद में डिस्क अथवा क्राउन होना आवश्यक है।
* कंदों को फफूंदी नाशक से उपचारित कर, जून के प्रथम अथवा दूसरे सप्ताह में 6 x 6 इंच की दूरी पर खेत में लगाया जाता है एवं सिंचाई की जाती है।
* एक हेक्टेयर हेतु 250 से 300 कि.ग्रा. कंदों की आवश्यकता पड़ती है।

खरपतवार:

* जमीन को नरम व खरपतवार रहित रखने के लिए 1 से 2 निराई गुड़ाई की आवश्यकता पड़ती है।

सिंचाई:

* फसल को बरसात में लगाया जाता है। रोपण के तुरंत बाद सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।
* फसल उखाड़े जाने तक भूमि में नमी आवश्यक है, अत: वर्षा पश्चात 10-15 दिनों से पानी देना चाहिए। खेत में पानी का ठहराव नुकसान दायक है।

उत्पाद प्राप्ति एवं संग्रहण:

* रोपण के 120 दिन पश्चात फसल पक कर तैयार हो जाती है। इस समय पत्तियॉ पीली पड़कर सूख जाती हैं।
* फसल पकने के उपरांत भी फसल को 4 महिनों तक खेत में रहने दिया जाता है जिससे कंद पूर्णतय: पक जाते हैं। पूर्णतय: पकने पर कंदों का रंग गहरा भूरा हो जाता है।
* मार्च-अप्रैल में कंदों को कुदाली की सहायता से उखाड़ लिया जाता है तत्पश्चात तोड़कर छीलकर सुखा लिया जाता है । छिली हुई मूसली सूखने में तीन-चार दिन लगते हैं।
* सूखी मूसली को पोलीथीन की थैली में संग्रहित किया जाता है।

उत्पादन:

* तकरीबन एक टन प्रति हेक्टेयर कंद प्राप्त होते हैं, जिसका वजन संपूर्ण प्रकिया व सुखाने के बाद 200 कि.ग्रा. रह जाता है।

संकलन:
डॉ. डी.के. मिश्रा
वन संवर्धन प्रभाग

निदेशक
शुष्क वन अनुसंधान संस्थान
कृषिमण्डी, चया पाली मार्ग, जोधपुर -342 005